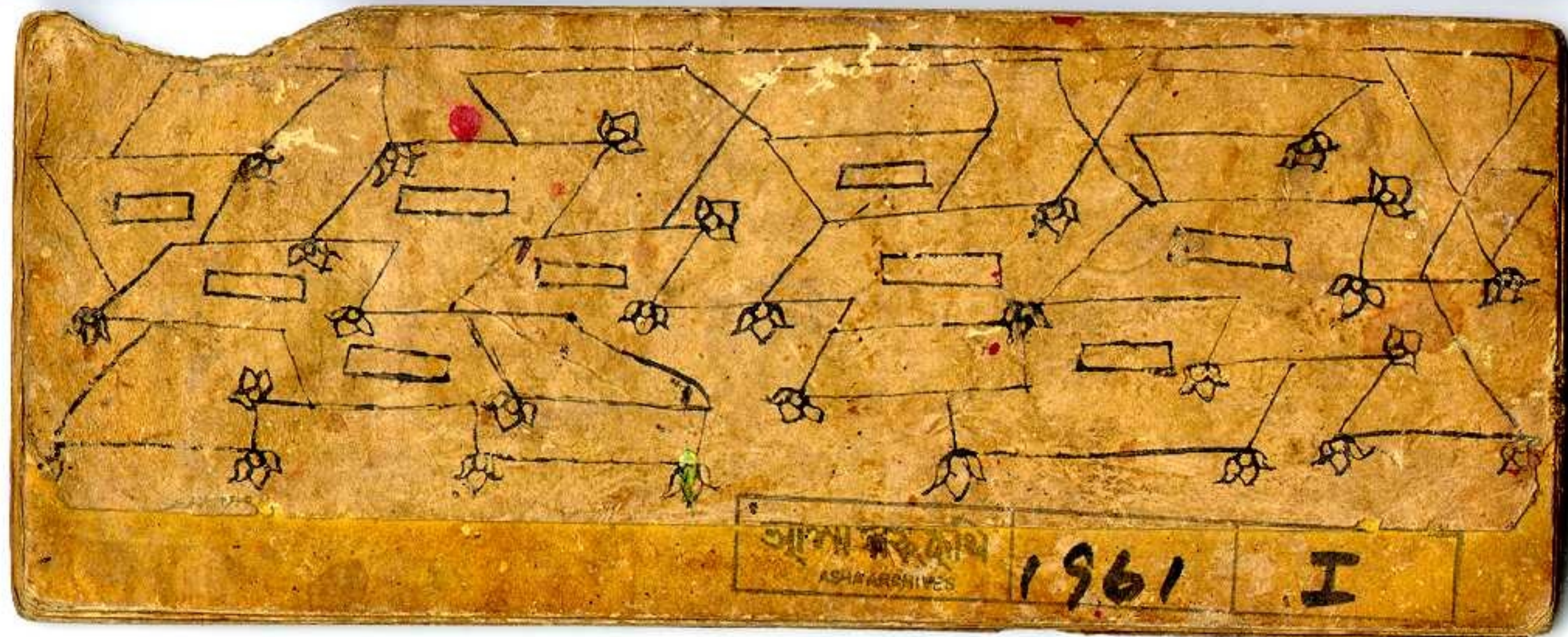




ASHA ARCHIVES

1961

I



रवीगणेशाय नमः ॥ ॐ अस्य श्री गुरुयानाम गणेशाय
 मनुष्य ॥ हंससमि ॥ अवाक गणेशाय कन्द ॥ यत्र म हंसदवताः
 ॥ हवीर्ज ॥ स ॥ हाकि ॥ सारु कीलक ॥ तुकि मूकि सिद्धार्थजय
 विनित्याग ॥ ॐ वाहूया माऊत ॥ ॐ सूर्यात्मन अरुणा
 र्या नमः ॥ ~~ॐ सामात्मन तर्जनी र्या नमः ॥ ॐ नि~~

वज्रनात्मन मधुमा र्या नमः ॥ ॐ निवा रासात्मन अनामिक
 र्या नमः ॥ ॐ धर्मात्मन कनिष्ठ कार्या नमः ॥ ॐ क्लानात्मन क
 वतलकनयुष्टार्या नमः ॥ ॐ सूर्यात्मन हृदयाय नमः ॥
 ॐ सामात्मन शिखर सारु ॥ ॐ निवज्रनात्मन शिवाये वषट् ॥
 ॐ निवा रासात्मन कवचाय हुँ ॥ ॐ धर्मात्मन ननु याय वो

षट् ॥ ॐ क्लानात्मनः शुभाय नमः ॥ ॐ तिष्ठन्मया ॥ ॐ ॐ
ट्टुक्कर्मरावनहकिं ॥ ददय कर्मलम ॥ धृतिं ॥ निवन्
यिही ॥ ॐ अजयानामगमयती ॥ यागिनी मातृदायिनी ॥ तस्य
संकल्पमात्रं ॥ सर्वपापेषु मूच्यते ॥ ॐ यत्र न जससवदः
ॐ तिष्ठन्मया ॥ अतया सदृशी विद्या ॥ अतया सदृशी जयः ॥

अतया सदृशी यन्त्रा नरुतानरु विद्यति ॥ कृत्स्नान्यां समूह्य
न्ना ॥ गमयती या धधनिही ॥ युक्तवादि महाविद्या यमवहसि
वदवित् ॥ षट् क्लानानि दिवात्रा ॥ सुरुभन कविं हति ॥ नतः
सखा महात्रा ॥ जीवा जयति सर्वदा ॥ षट् स्वासा श्रवत्या
ह ॥ षट् या दद्यति का स्मृता ॥ तासां षट् वहात्रा ॥ जीवैस्सखाय

सुंयुनवञ्जयत् ॥ यत्र मा त्तन सहस्रं सं कल्याविधिप्रवच ॥
तदत न्तर्वासां यामं कृत्वा ॥ मूलमनुवाच नयं ददतवान्
उवाच यत् ॥ यथाविधिविधानं कृत्वा ॥ अथ संकल्पं कुर्यात् ॥
ॐ अस्य श्री अजया गायत्री मन्त्रस्य ॥ हं स मधि ॥ यत्र सह सा
दवता ॥ अत्र का गायत्री कृत्वा ॥ हं वीजं ॥ संकल्पि ॥ साह मितिका

लकं ॥ उदारु स्वन ॥ सर्व कामार्थे अजया जाय सहं कविषा
॥ आधनवक्रं जाय कुर्यात् ॥ आधनवक्रं गुञ्ज स्नानं चतुर्द
लं यद्यन कवर्तुं चतुर्द्वर्तुं चतुर्माह का सहितं वादि सान्तं व
गं स ॥ चतुष्पत्रिवाच दवता येन स ॥ वक्रवर्तुं लं वीजं ग
दक सधि ॥ गद्यति दवता ॥ सद्धि सिद्धि गकि ॥ मूसका वाहनं

यत्र लुक् मल्लुक् वाचस्व न आयू धी च अलं कान् रुषि तं च स
पवित्रा न सां गायं ग वाग (दक्षाय नमः ४ वाग (दक्षाय नमः ४
न मात्मन नमः ४ वा उ (दक्षाय नमः ४ पूजना त्दर्शन नमः ४ कविषु
॥ आवाहनं आसनं पादं स्नानं आचमनं वस्त्रं यस्मात्पवीतं
यस्मात्पवीतं नैव गन्धं पूषं धूपं दीपं नैव घ्नं तां वूलं आवाहिकं

वासनं दलु वल्यदक्षिणात् तत्तत्सुतिं विष्णु मघटिका १७ य ४०॥
यन्मात्स्वविस्नानं च कुं जायं कुर्यात् ॥ षट्सहस्रं मुञ्जया जायति
वदयामि ॥ स्वाधिसनानं च कुं लिंगस्नानं षट्सहस्रं यद्वा षट्सहस्रं
षट्सहस्रं कासहितं वा दिलात् ४ वरं मयं नल ॥ षट्सहस्रं विवाहं द
वताये नमः ४ ॥ पीतवर्णं संपाजं अग्निमग्नि ४ वावृक्षादवता सावि

गीतकि ४ हंसवाहनं दधु कमलल पद्मकं आयुधं च अलंकान
रुषितं च सयविवात्र सांगम्यांग प्रोवक्तु (वनम ४) प्रोवक्तु स्वतृ
यीयत्र मात्मन नम ४॥ वाउ (मय चाने ४) यूजनात्तर्जनम हंकविष्ण
॥ आवाहनं आसनं हूत्यादि ॥ ॥ ॐ पञ्चातु मनिपूत्रचक्रजाया
कूर्यात् ॥ मनिपूत्रचक्र नाहिरुक्ता न दहदलयम दहवर्तु दह

मारुकासहितं गदिरुक्ता न उरुतं तथं दधनं यद ॥ दहयविवा
त्रदवतायेनम ४॥ नीलवर्तु मंवाजं यवनमपि ४ प्रोविष्णुदव
ता महालक्ष्मीहकि ४ गनूजवाहनं हंसचक्र गदापद्म आयु
धं च अलंकालरुषितं च सयविवात्र सांगम्यांग प्रोविष्णुद
वतायेनम ४॥ प्रोविष्णुस्वतृयीयत्र मात्मन नम ४॥ वाउ (मय

किं धूत्यावाहनं अकार आयुधं च अलंकाररूपितं च सयत्रि
वात्र सांगम्यांग ॥ धीयत्रमयुत्र दत्ताय नमः ॥ धीयत्रमयुः
त्रुस्वत्रुधिद्ययत्रमात्मनं नमः ॥ धातुलायचाने ॥ यजनादः
र्जनमर्हकविधा ॥ आवाहनं आसर्तं ॥ ॐ यश्चात्तु अजना
मयत्र कुजायी कुर्यात् ॥ अजनामयत्र कुलितस्नानं सह

Ajapa gāyatrī mūlā

आजपा गायत्री

1961

I

CSIA ARCHIVES

सुदलपद्मं सरुसुवर्तु सरुसुमाह कासहितं अकावादि ककाः
वा तर्कं ॥ अ० आ० ॐ ॐ उ० उ० म० म० ॐ ॐ च० च० उ० उ० अ० अ० ॥ कखगघङ
च० क० ज० म० ॐ ॐ ट ॐ ॐ द० द० त० थ० द० ध० न० य० र० व० र० म० य० व० ल० व० ण० ष० स०
रु० क० ॥ अ० आ० ॐ ॐ उ० उ० म० म० ॐ ॐ च० च० उ० उ० अ० अ० ॥ कखगघङ च० क०
ज० म० ॐ ॐ ट ॐ ॐ द० द० त० थ० द० ध० न० य० र० व० र० म० य० व० ल० व० ण० ष० स० रु० क० ॥

अ० आ० ॐ ॐ उ० उ० म० म० ॐ ॐ च० च० उ० उ० अ० अ० ॥ कखगघङ च० क० ज० म० ॐ
ट ॐ ॐ द० द० त० थ० द० ध० न० य० र० व० र० म० य० व० ल० व० ण० ष० स० रु० क० ॥ अ० आ०
ॐ ॐ उ० उ० म० म० ॐ ॐ च० च० उ० उ० अ० अ० ॥ कखगघङ च० क० ज० म० ॐ
ट ॐ ॐ द० द० त० थ० द० ध० न० य० र० व० र० म० य० व० ल० व० ण० ष० स० रु० क० ॥ अ० आ०
ॐ ॐ उ० उ० म० म० ॐ ॐ च० च० उ० उ० अ० अ० ॥ कखगघङ च० क० ज० म० ॐ ट

ॐ ह्रीं तथ दधन यरुवरु मयनल वलष सरुलक ॥ अं अं
ॐ ह्रीं उडुमम ॐ उ उ उ उ अं अं ॥ कखगघढ च कजम ॐ
ॐ ह्रीं तथ दधन यरुवरु मयनल वलष सरुलक ॥ अं अं
ॐ ह्रीं उडुमम ॐ उ उ उ उ अं अं ॥ कखगघढ च कजम ॐ
ॐ ह्रीं तथ दधन यरुवरु मयनल वलष सरुलक ॥ अं अं

ॐ ह्रीं उडुमम ॐ उ उ उ उ अं अं ॥ कखगघढ च कजम ॐ
ॐ ह्रीं तथ दधन यरुवरु मयनल वलष सरुलक ॥ अं अं
ॐ ह्रीं उडुमम ॐ उ उ उ उ अं अं ॥ कखगघढ च कजम ॐ
ॐ ह्रीं तथ दधन यरुवरु मयनल वलष सरुलक ॥ अं अं
ॐ ह्रीं उडुमम ॐ उ उ उ उ अं अं ॥ कखगघढ च कजम ॐ



ॐ ॐ उ उ म म ॐ ॐ ज जे जे ओ ओ म म ॥ क ख ग घ ङ च क ज ण ॐ
ट ठ ड ढ त थ द ध न य र व र म य व ल व ह ष स ह ल क ॥
१००० ॥ स ह स य त्रि वा न द व ता ये न म ॥ नाना व र्ण ह वी र्ज
व क्ता विष्णु म ह ध्व न म वि ॥ गी य न म ह स य न मा त्मा द व ता अ
दि मा त्त कि ॥ य न म गू न्य वा ह न नि ना का न आ य र्ध व अ ल

का न रू षि तं च स य त्रि वा न सा स्त्रा या म् ॥ गी य न म ह स य न
मा त्मा द व ता ये न म ॥ गी य न म ह स स वृ षि त य न मा त्म न
न म ॥ षा ण स्त्रा य वा ने ॥ यू ज ना त् ॥ ॥ ॐ ति अ ऊ या जा य म
हं क वि षा ॥ ने व र्ण म म र्था या मि ॥ ष ट् च कं षा ण म धा रं नि
गू न्यं वा म र्थं च की ॥ स्व र्थं द ह न जा ना मि क र्थं मा कृ ति या गि न

शांतिनादलायसमिधिविचित्रं अजयायटलं संपूर्णं ॥

हृका ॥ ॥ ॥ ॥
 ॐ हं सः हं साय विद्महं सा हं हं साय धीमहि तन्नाहं सः यवाः
 दयात् ॥ अऊ या ग य जी ॥ ॥ ॐ ध्वनिनादाय विद्महं निनाकाः
 नाय धीमहि तन्नाध्वनिनादः यवादयात् ॥ ॐ अनाह
 तध्वनिविद्महं अन्तर्ध्वनीय धीमहि तन्नाध्वनिः यवादयात् ॥

महातादगभयश्री ॥

॥ श्रीरामनाथाय नमः राम राम राम

रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम
रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम
रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम
रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम
रामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामरामराम

स्वस्ति श्रीशिवाय नमः शिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिव
शिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिव
शिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिवशिव



स्वस्ति श्रीगणाधिपतय नमः



श्रीगणपतयनमः॥ माहावन्दजोगिस्वरिगुञ्जेकालिकरात्रिमहाडा
माहाडामरिचाठेहासाजगतव्यामिनिचन्द्रकापालवैतितुमेकाप
रब्रह्मरुपेनसिधााल्लटंति

स्यसि श्रीगणेशायनमः॥ समातिकमन्त्रेसम्पदन्माहेस्वरिनिनाकोभारि
पुदमनासनकरिजक्तायुधावेस्तविवाहाहियतद्योरद्वरद्यमभिप्रादिभ्व
नेद्योद्योमहागनताभेभोरवराभोरभेभेवमात्रिका॥१॥ससिकल

कलंककलंककलंककषदमकादिमलधिजलमपिमंयडितोनिधनित्या
नरुनिकुजनीपातकयतानकेसदासोवपसिविद्विद्विमोगजिर्वीवधि
विधाता॥ श्रीगणेशायनमः॥ सावरीमूर्जेतनया